अनहद लोक

(प्रतिध्वनि कला एवं संस्कृति की)

सम्पादक : डॉ॰ मधु रानी शुक्ला
सम्पादक मण्डल : डॉ॰ राजश्री रामकृष्ण, डॉ॰ मनीष कुमार मिश्रा, डॉ॰ धनंजय चोपड़ा, डॉ॰ ज्यं
सहायक सम्पादक : सुश्री शाम्भवी शुक्ला
मल्टीमीडिया सम्पादक : श्रेयस शुक्ला

प्रकाशक एवं वितरक :
व्यंजना (आर्ट एण्ड कल्चर सोसाइटी)
109 डी/4, अबुबकरपुर, प्रीतम नगर
सुलेम सरांय, प्रयागराज - 211 001
मो॰ : 9838963188, 8419085095
ई-मेल : anhadlok.vyanjana@gmail.com
वेबसाइट : vyanjanasociety.com/anhad_lok

मूल्य : 300/- प्रति अंक, पोस्टल चार्जेज अलग से
सदस्यता शुल्क
वार्षिक : 700/-
तीन वर्ष : 2,100/-
आजीवन : 15,000/-

संगीत नाटक अकादेमी के सहयोग से प्रकाशित

© सर्वाधिकार सुरक्षित
- रचनाकारों के विचार मौलिक हैं
- समस्त न्यायिक विवाद क्षेत्र इलाहाबाद न्यायालय होगा।

मुद्रक :
गोयल प्रिन्टर्स
73 A, गाड़ीवान टोला, प्रयागराज
फोन - 0532-2655513

UGC CARE-listed, Peer R

आनहद लोक

वर्ष–10, अंक – 19, 2024
(जनवरी–जून)

साहित्यिकी

46. पंजाब की हिंदी उपन्यास परम्परा : 21वीं सदी के विशेष संदर्भ में — *डॉ. मोनिका घुल्ला* — 271

47. Restating Worldviews through Narratives: A Study of Postcolonial Ecology in *The God of Small Things* — *Dr. Manchusha Madhusudhanan* — 277

48. The Present Status of Plays Written for Bhaona in Assam : A Study — *Dr. Dulal Hazarika* — 283

49. Necessity of Religious Faith : A Critical Analysis of the Select Novels of R. K. Narayan — *Robin C. U.*, *Dr. G. Parvathy* — 289

50. Fighting Social Conventions and Prejudices: A Revolutionary Approach in Ashapurna Devi's Trilogy — *Anju PS*, *Dr. Ramanathan PV* — 294

51. Predator-Prey Relationship in the Patriarchal World : A Metaphorical Analysis of Mahesh Dattani's "30 Days in September" — *Alka Jain* — 299

52. कुमार कृष्ण की कविता में ग्रामीण संवेदना — *मुकेश कुमार* — 307

53. Shared Culture for Cosmopolitan Identity : A Critique of Amit Chaudhuri's *Afternoon Raag* — *Ancy A*, *V. Virgin Nithya Veena* — 314

54. Dreams as Healer and Mentor : A Reading on Tahar Ben Jelloun's *The Sand Child* — *Geethu Vijayan*, *Dr. B. Sajeetha* — 320

55. A Close Reading of the Novel The White Tiger — *Sona Sharma*, *Mary Raymer* — 324

56. कथाकार शांता कुमार के उपन्यास 'वृन्दा' में पर्यावरण : संरक्षण का भारतीय सन्दर्भ — *धर्म चन्द*, *डॉ. प्रिया शर्मा* — 328

57. The Presence of Cultural Conflict in Manju Kapur's Novel Custody — *S. Kanagarasu*, *Dr. B. Shyamala Devi* — 333

58. Cultural Relevance in the English Translation by Dhirendra Nath Bezbaruah of Birendra Kumar Bhattacharya's Novel 'Mrityunjay' — *Dipak Das* — 337

कथाकार शांता कुमार के उपन्यास 'वृन्दा' में पर्यावरण : संरक्षण का भारतीय सन्दर्भ

धर्म चन्द
शोधार्थी (हिन्दी),
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

डॉ. प्रिया शर्मा
सहायक आचार्य हिंदी,
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

पर्यावरण अस्तित्व का ऐसा घटक है जो मानव-जीवन से अक्षुण्ण संपृक्त है। अस्तित्व का यह जीवनदायी घटक सम्पूर्ण पारिस्थितिकी-तंत्र को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित और संचालित करता है। मानवीय-सत्ता और संस्कृति के पोषण तथा उन्नयन में पर्यावरण की अमूल्य भूमिका है। जिसे आज के भोग-प्रदत्त दौर में विस्मृत नहीं किया जा सकता। भारत में प्रकृति संरक्षण हेतु ममत्व की पवित्र और पूज्य भावना रही है। जो भारत की 'वसुधैव-कुटुम्बकम्' की भावना को न केवल चरितार्थ करती है बल्कि संपूर्ण मानवीय अस्मिता को संरक्षित करने का आवाहन भी करती है। भारतीय जीवन-पद्धति और पर्यावरण का अनादिकाल से गहरा और अन्योन्याश्रित सम्बन्ध रहा है। इस सम्बन्ध को इंगित करते हुए प्रसिद्ध समालोचक 'हेमराज कौशिक' लिखते हैं- 'प्रकृति पूजन भारतीय संस्कृति का आध्यात्मिक मूल्य रहा है। यही कारण है कि हमारे मनीषियों और ऋषि-मुनियों ने पृथ्वी को माँ के रूप में स्मरण कर उसकी पूजा-अर्चना पर बल दिया। वरुण देवता को जल का देवता माना गया है। नदियों को पवित्र और पूज्य माना गया है। इसी भांति वनस्पति जगत् जंगल में अपना विकास प्राप्त करता है, उसे भी आराध्य स्वीकार किया गया है। हमारी संस्कृति में वृक्षों की पूजा धार्मिक आस्था का अंग रही है।'[1] जीवन के सम्पूर्ण क्रिया-कलापों को धर्म से जोड़ना हमारे पुरखों की दिव्यदृष्टि को दर्शाता है। भारत के यह शाश्वत सांस्कृतिक मूल्य न केवल समस्त चल-अचल में सामंजस्य स्थापित करते हैं बल्कि सम्पूर्ण जगत का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं। धरा के कण-कण में ईश्वरीय-सत्ता विराजमान है। ऐसा विचार मन में आते ही व्यक्ति भावविह्वल हो जाता है। किसी भी जड़-चेतन तत्व को मन, वचन, कर्म से क्षति पहुँचाने को, ईश्वरीय अपमान समझता है जोकि उसे स्वीकार नहीं। भारतीय सांस्कृतिक आदर्श समस्त वसुंधरा को माँ की संज्ञा देते हैं इसलिए माँ हमेशा पूजनीय और वंदनीय होती है। उसे भोग करने का विचार भी मन में आना अति-निंदनीय है अर्थात भारत के मनीषियों का संकल्प और आदर्श पुरुषार्थ-चतुष्टय से प्रतिबद्ध है, जहाँ भोग तो है लेकिन त्याग के बाद।

उपन्यासकार 'शांता कुमार' न केवल भारत के सांस्कृतिक-आदर्श के पुरोधा हैं बल्कि समसामयिक युगबोध के तीव्रगामी भी है। कथाकार 'शांता कुमार' के उपन्यास 'वृंदा' की मूल संवेदना पर्यावरणीय चिंता है। भोग के इस कुत्सित दौर से अभिज्ञ कराता यह उपन्यास प्रकृति संरक्षण की भारतीय आध्यात्मिक मूल्यवत्ता को इंगित करता है। लेखक एक और जहाँ नकारात्मक चरित्रों की सृष्टि करके प्रकृति की नैसर्गिक छटा को विकृत करने वाले सत्ता में डूबे भ्रष्ट राजनीतिज्ञों, निजी अभीप्सा की तुष्टि में लिप्त नौकरशाहों तथा दुरभिसंधि जनित प्रभुत्व-संपन्न लोगों के घिनौने और